HONEY BEE NETWORK

प्रयोगधर्मी अन्वेषक तथा पारम्परिक ज्ञान सम्पन्न लोगों की आवाज़

५३ वीं शोधयात्रा

भूरीमाटी, जिला-झाबुआ, मध्यप्रदेश से
अंबाला, जिला-छोटाउदेपुर, गुजरात

दिनांक: 04 से 10 जून, 2025

www.sristi.org

Sristi INNOVATIONS

Gian
www.gian.org

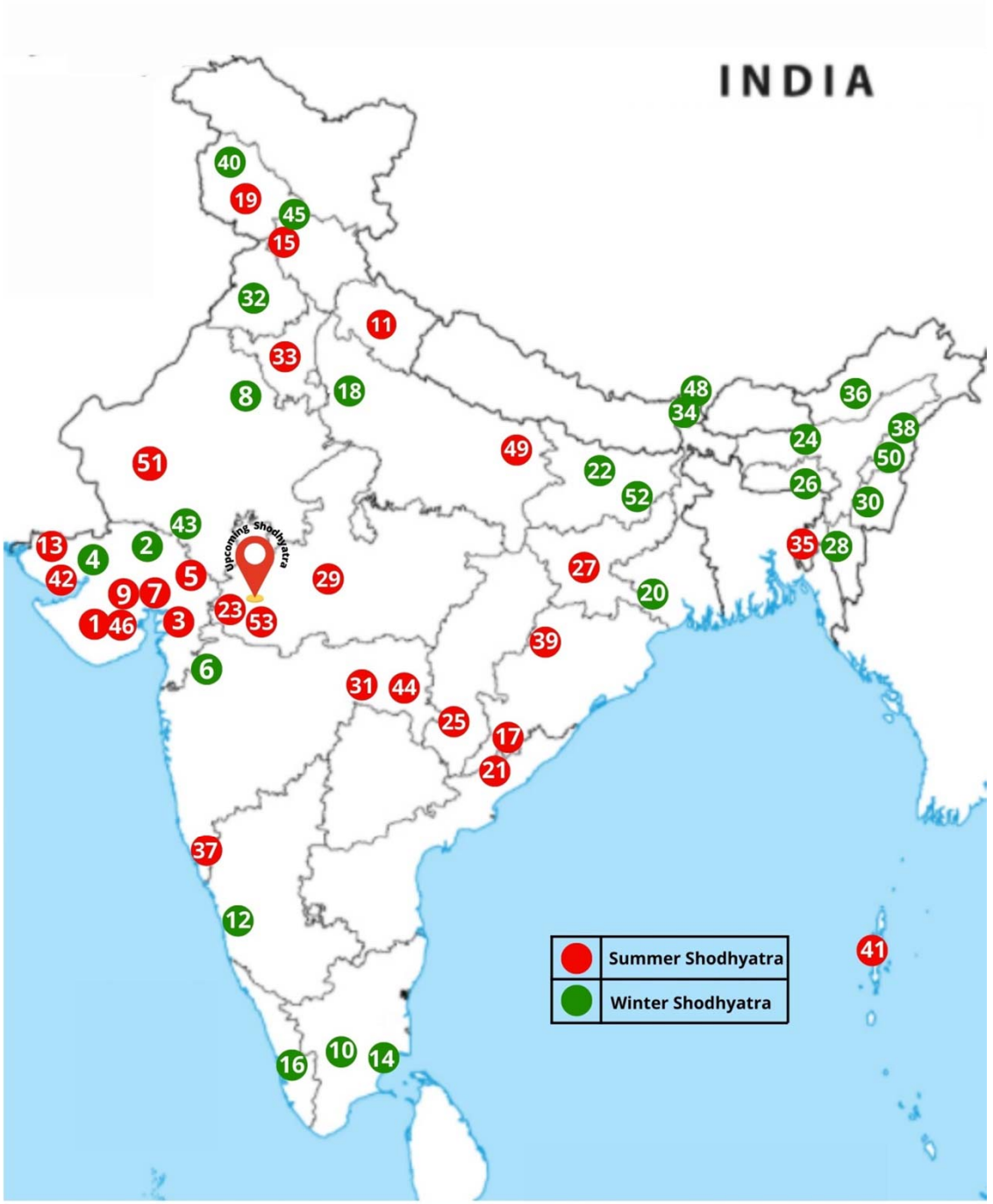

SHODHYATRA 1 TO 52

"चले तो सही, पर रास्ता नहीं बना पाए..."

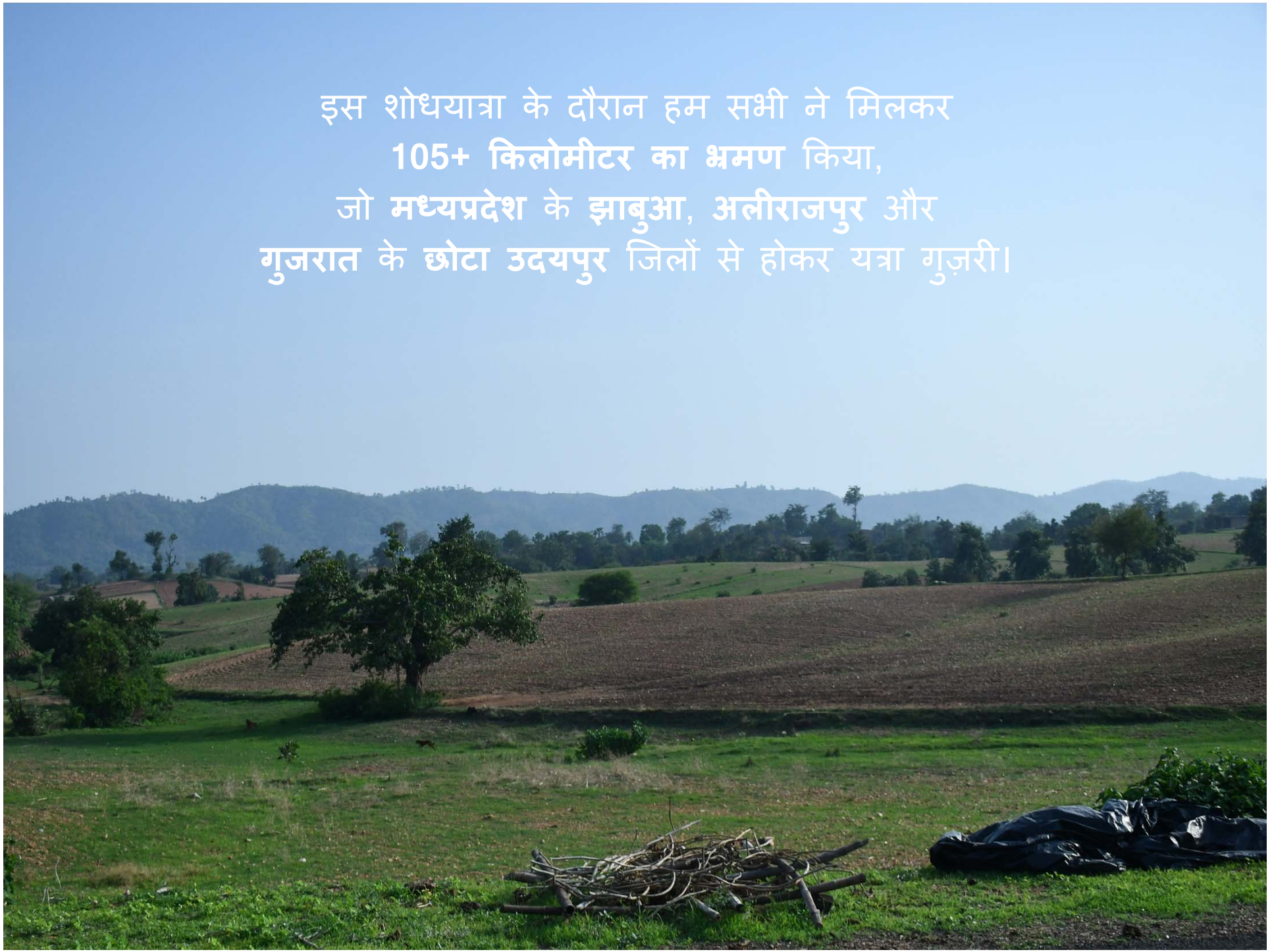
इस शोधयात्रा के दौरान हम सभी ने मिलकर
105+ किलोमीटर का भ्रमण किया,
जो **मध्यप्रदेश** के **झाबुआ**, **अलीराजपुर** और
गुजरात के **छोटा उदयपुर** जिलों से होकर यत्रा गुज़री।

इस शोधयात्रा में देश के 10 राज्यों में से आए
और 40 से अधिक शोधयात्री जुड़े।

53वीं शोधयात्रा के दौरान हमारी टीम ने **कुल 23 गांवों** का दौरा किया:

मध्यप्रदेश के 17 गांव **गुजरात के 6 गांव**

"स्थानीय महिलाओं ने नाटक के माध्यम से
स्थनीय लोगों और शोधयात्रियों को शोधयात्रा का संदेश समझाया।"

झाबुआ के स्थानीय इनोवेटर के साथ संवाद

गाँव के किसानों और कारीगरों ने संशोधन पर संवाद किया।"

रात्रि में मिटिंग में गांव वालो के साथ संवाद

शोधयात्रियों के साथ संवाद

Cultural Innovation

रमेश और शांति परमार - भीली गुड़िया

- झाबुआ के **रमेश परमार और शांति परमार** 30 साल से पारंपरिक **भीली गुड़िया** और **जनजातीय खिलौने** बना रहे हैं, जिन्हें 2023 में **पद्मश्री** से सम्मानित किया गया। उनकी कला ने महिलाओं को रोज़गार दिया है और झाबुआ की गुड़िया को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई है।

"आदिवासी गुड़िया"

सुभाष गिदवानी – झाबुआ

मो:- 9425033066, 8120049966

कला | गिदवानी परिवार में 3 पीढ़ियों से चला आ रहा आदिवासी चरित्रों की गुड़िया बनाने का कारोबार, देते हैं फ्री ट्रेनिंग

विदेशों तक छाई झाबुआ की आदिवासी गुड़िया

भास्कर न्यूज़ | रोहतक

चार दशक पहले तक मध्यप्रदेश के आदिवासी इलाके में गुमनामी में दबी झाबुआ की कपड़े की गुड़िया एक आइडिया की वजह से अब ऑस्ट्रेलिया व जर्मनी तक अपनी पहचान बना रही है। इससे न केवल एमपी की संस्कृति का ही प्रचार हो रहा है बल्कि 100 से ज्यादा आदिवासी तबके के परिवारों को रोजगार भी मिला है। इनमें कई दिव्यांग भी शामिल हैं। इस कपड़े की गुड़िया के देश-दुनिया में मशहूर बॉर्बी डॉल की तरह नए-नए पारंपरिक अवतार तैयार किए गए हैं। इनमें तीर कमान चलाते, ढोलक बजाते, गट्ठर उठाते जैसे पारंपरिक चरित्रों को शामिल किया गया है। कपड़े की गुड़िया 35 वर्ष पहले झाबुआ के उद्धव गिदवानी की कल्पना की उपज है। अब इस कला को उनके बेटे सुभाष गिदवानी आगे बढ़ा रहे हैं।

रोहतक. झाबुआ गुड़िया को प्रदर्शित करते मध्यप्रदेश से आए हस्तशिल्पी सुभाष।

स्टेट अवॉर्डी सुभाष ने 300 को बनाया आत्मनिर्भर

झाबुआ गुड़िया बनाने की कला में स्टेट अवॉर्डी सुभाष से 300 से ऊपर लोग फ्री में ट्रेनिंग लेकर इस कला द्वारा अपना परिवार चला रहे हैं। वहीं, अब महिलाओं के अलावा लड़कों को भी ट्रेनिंग दी जा रही है। इस समय 25 लड़कों के एक बैच की ट्रेनिंग पूरी होने वाली है। ट्रेंड होने के बाद उनको काम उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी सुभाष उठाते हैं। वे देशभर में लगभग 300 एग्जीबिशन भी लगा चुके हैं। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, पूर्व राष्ट्रपति कलाम से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री तक के यहां झाबुआ की गुड़िया गिफ्ट के रूप में भेजी जा चुकी है।

1500 लोगों को बटुए बनाने की सिखाई कारीगरी

सिहोर निवासी परवेज खान ने पत्नी नईमा सुल्तान के साथ मिलकर जरी के बटुए तैयार करने को अपना कैरियर बनाया। भोपाल में अपने नाना से कला की बारीकियां सीखीं। खुद सफल होने के बाद उन्होंने लोगों को निःशुल्क ट्रेनिंग देनी शुरू की। उनके द्वारा सिखाए गए 1500 कारीगर जरी के बटुए, मोबाइल कवर, चाय की केतली ढकने की टिकोजी और ट्रैवल में सामान साथ रखने के लिए पाउच बनाकर रोटी का प्रबंध करते हैं।

21वें राष्ट्रीय युवा महोत्सव में युवा कृति के तहत लगे उनके स्टॉल पर बातचीत के दौरान सुभाष ने बताया कि मध्यप्रदेश का झाबुआ जिले में 90 फीसदी आदिवासी बहुल है। यहां चार दशक पहले लोगों के पास काम नहीं था। इसी दौरान उद्धव के दिमाग में आइडिया आया और उन्होंने आदिवासी चरित्रों वाली कपड़े की गुड़िया बनानी शुरू की। फिर भी ये एकला चलो की राह पर दिन रात अपने अभियान को गति देते रहे। कुछ समय बाद उनकी बनाई गुड़िया पसंद की जाने लगी और आमदनी का जरिया बनी। उन्होंने अन्य परिवारों को भी इस काम से जोड़ा।

झाबुआ, मध्यप्रदेश का एक आदिवासी क्षेत्र है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक, विरासत और हस्तशिल्प के लिए जाना जाता है। झाबुआ की गुड़िया, जिसे स्थानीय भाषा में "आदिवासी गुड़िया" कहा जाता है, यहाँ की परंपरा और जीवनशैली का प्रतीक है। यह गुड़िया कपड़े, लकड़ी और प्राकृतिक रंगों से हाथ से बनाई जाती है।

इन गुड़ियों की विशेषता उनका पारंपरिक पहनावा होता है, जो आदिवासी महिलाओं के वस्त्र, आभूषण और श्रृंगार को दर्शाता है। झाबुआ की गुड़िया न केवल एक खिलौना होती है, बल्कि यह आदिवासी समाज की पहचान, लोक संस्कृति और शिल्पकला को दर्शाने का माध्यम भी है।

यह गुड़िया खासतौर पर त्योहारों, मेले और सांस्कृतिक आयोजनों में बेची जाती है। पर्यटकों के बीच भी बहुत लोकप्रिय है। इसे बनाकर स्थानीय कारीगर अपनी आजीविका चलाते हैं। यह शिल्पकला महिलाओं को स्वरोजगार भी प्रदान करती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

झाबुआ की गुड़िया भारतीय हस्तशिल्प की एक अनोखी धरोहर है, जो न केवल सुंदरता में अद्‌वितीय है, बल्कि परंपरा और संस्कृति का भी जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है।

सुभाष गिदवानी जी ने झाबुआ की पारंपरिक आदिवासी गुड़िया कला के संरक्षण, विकास और वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके पिता, श्री उद्धव गिदवानी, ने 1980 के दशक में 'शक्ति एम्पोरियम' की स्थापना की थी, जिसे स्थानीय लोग 'गुड़िया घर' के नाम से जानते हैं। इस पहल का उद्देश्य आदिवासी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और इस कला को व्यावसायिक रूप से स्थापित करना था।

सुभाष गिदवानी ने अपने पिता की इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए, न केवल गुड़िया निर्माण की तकनीकों में नवाचार किया, बल्कि इसे देश-विदेश में प्रदर्शित भी किया। उन्होंने 300 से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भाग लिया है, जिससे झाबुआ की गुड़िया को व्यापक पहचान मिली है।

इसके अतिरिक्त, उन्होंने लगभग 150 से 200 महिलाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वरोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। उनके प्रयासों से झाबुआ की गुड़िया को मध्यप्रदेश सरकार द्‌वारा सम्मानित भी किया गया है।

सुभाष गिदवानी जी के योगदान से यह पारंपरिक कला न केवल संरक्षित हुई है, बल्कि इसे एक नई पहचान और बाजार भी मिला है।

भारती सोनी

भारती सोनी हर साल **5000 मिट्टी की मूर्ति** बनाने के लिए स्कूलों में जाकर बच्चो को सिखाती है। उन्होंने आज तक बहुत सारी महिलाओं को उजागर किया है। साथ-साथ उन्होंने आर्ट और म्यूज़िकल से सीखकर आगे बढ़ाया हैं | आदिवासी हलमा एक आह्वाहन करने वाला पेन्ट बनाया है। **4300** लड़की के ऊपर कोट लिखर उनको प्रोत्साहित किया है।

स्कूली बच्चो को ईको फ्रेंडली मिट्टी के गणेश बनाना सिखाया

7 हजार से अधिक बच्चो को दिया निःशुल्क प्रशिक्षण

संवाददाता - धर्मेश सोनी
पेटलावद। लायंस क्लब पेटलावद सेंट्रल व संकल्प ग्रुप झाबुआ के संयक्त तत्वधान में नगर के विभिन्न शासकीय व अशासकीय विद्यालय के लगभग 7 हजार बच्चो पर्यावरण संरक्षण के तहत मिट्टी के ईको फ्रेंडली गणेश प्रतिमा बनाने का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया गया। नगर के शासकीय सीएम राइज विद्यालय, सफलता विद्या मंदिर, एमराल्ड जूनियर कालेज, आदर्श स्कूल, शारदा स्कूल, गुरुकुल एकेडमी में ईको फ्रेंडली गणेश मूर्ति बनाने का प्रशिक्षण आयोजित हुआ। मुख्य रूप से प्रत्येक स्थान पर संकल्प ग्रुप प्रमुख भारती सोनी, लायंस क्लब के अध्यक्ष नीलेश भट्ट मौजूद रहे। भारती दीदी सोनी ने बच्चो को मिट्टी की गणेश प्रतिमा अपने हाथों से बनाकर गणेशोत्सव पर घरों में स्थापित करने का संदेश दिया। साथ ही अपने आसपास के लोगों को शिविर में सीखे गुर को सिखाने की बात कही। संकल्प ग्रुप की ज्योति त्रिवेदी, देवकन्या सोनगरा विशेष रूप से मौजूद थी। इस दौरान अध्यक्ष निलेश भट्ट ने कहा हम सब का दायित्व है पर्यावरण का संरक्षण करें व पॉलीथिन का प्रयोग ना करें, ना करने दे। लायंस सचिव गजेंद्र काग, कोषाध्यक्ष अनुराग गौड़, समिति के सदस्य विकास चौहान, आलोक चौहान, यश रामावत, हरिओम पाटीदार, दिलीप राठौड़, निलेश कुशवाह, मनोज जानी ने प्रशिक्षण के उद्देश्यों को बताते हुए कहा कि आने वाले त्योहारों में हम सब ईको फ्रेंडली गणेश प्रतिमा घरों में विराजित कर पूजा करें व पॉलीथिन के स्थान पर पर्यावरण हितैषी सामग्री का प्रयोग कर हमारे पर्यावरण को दूषित होने से बचाए।

अर्चना राठवा - कला से सशक्तिकरण

- अर्चना राठवा, छोटाउदेपुर जिले के एक गाँव से हैं, जहाँ **उन्होंने वार्ली और पिठोरा** कला को एक अभिनव व्यवसाय का रूप दिया है। उन्होंने अपनी इस पहल से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त किया है और इसके लिए उन्हें सम्मान सहित **1.25 लाख रुपये** भी प्राप्त हुए हैं।

शिवकुमरजी
अलीराजपुर मध्यप्रदेश

- **गाथा स्मृति-फलक** जनजातीय समुदायों द्वारा मृतक की स्मृति में स्थापित पत्थर के स्तंभ होते हैं, जो उनके जीवन और योगदान की कहानी बयान करते

गाथा स्मृति-फलक (Memory Pillar) एक प्रकार का स्मारक स्तंभ होता है, जिसे भारत के विशेषकर जनजातीय समुदायों, जैसे भील, गोंड, संथाल आदि द्वारा मृतक की स्मृति में स्थापित किया जाता है। यह स्तंभ पत्थर से बना होता है। उस पर मृत व्यक्ति के जीवन से संबंधित दृश्य, कर्म और सामाजिक योगदान को दर्शाते है।

इन स्तंभों का उद्देश्य केवल स्मरण नहीं होता, बल्कि यह मृतक के जीवन की गाथा को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का माध्यम होता है। इस पर अक्सर योद्धाओं, शिकारी, किसान या सामाजिक नेताओं की छवियाँ होती हैं, जो उस व्यक्ति की भूमिका को दर्शाती हैं। कुछ स्मृति-फलक धार्मिक प्रतीकों और देवी-देवताओं की छवियों से भी सजाए जाते हैं, जो मृत आत्मा को सम्मान और मोक्ष की दिशा में अग्रसर करने की भावना को दर्शाते हैं। स्मृति-फलक की स्थापना के समय एक विशेष समारोह होता है जिसमें गाना-बजाना, पारंपरिक नृत्य, भोज और कभी-कभी बलिदान जैसे कर्म भी शामिल होते हैं। यह न केवल मृत व्यक्ति को सम्मान देने का एक तरीका है, बल्कि सामुदायिक एकता और परंपरा के संरक्षण का भी प्रतीक है। गाथा स्मृति-फलक जनजातीय लोक-संस्कृति और उनके जीवन-दर्शन का अभिन्न हिस्सा हैं।

इस मूर्तियों को शिवकुमारजी ने बनाया है। उनकी कला की चर्चा पूरी मध्यप्रदेश में हो रही हैं।
वीडियो लिंक
https://www.youtube.com/live/-ku7xXprzSw?si=0qFvikNbfBjrgGw-

थावरसिंग भूरिया

- थावरसिंग भूरिया और पेमा फातिया जी ने मिलकर बहुत पिठोरा आर्ट बनाया है। उन्होंने **55 लंबा** पिठोरा बनाया था आज वो बॉम्बे में लगाया हुआ है।

हमने छोटाउदेपुर के मोटी दुमाली गांव में बाबा देव का देवस्थान देखा। वहां पर और यह परंपरा में 100 साल के बाद जो वहां के स्थानीय देव है, उनकी पीढ़ी को बदलने का उत्सव मनाते हैं। उनको गामशायनी के नाम से मनाते हैं। वो अवसर को हम ने देखा नहीं लेकिन जो देवी की प्रतिष्ठा ने हमे प्रभावित किया है।

अनु भाभोर

अनु भाभोर ने **400** से अधिक नुक्कड नाटक के माध्यम से समाज के अलग-अलग विषयों पर समाज को उजागर करने का काम किया है और साथ-साथ इस इसरो में भी कार्यक्रम भी किया है। अभी **62** साल की उम्र में स्पोर्ट में स्टेट लेवल खेलकर गोल्ड मेडल जीता है।

संतोष बसोंड

- **संतोष बसोंड** झाबुआ में **बांस** से विविध उत्पाद बनाते हैं, जिनमें उनकी खास झाड़ू खड़े होकर इस्तेमाल की जाती है और थकान कम होती है। यह टिकाऊ झाड़ू 6 महीने तक चलती है, गहराई से सफाई करती है और प्रशासन हर दो महीने में 500 झाड़ू खरीदता है।

रतनभाई राठवा
कनलवा, छोटाउदेपुर

लकड़ी में जिंदा होती संस्कृति की आत्मा

छोटाउदेपुर जिले के कनालवा गांव के रतनभाई पोहलिया राठवा कोई आम कारीगर नहीं हैं। वे एक ऐसे लोक कलाकार हैं, जिन्होंने अपने हाथों से न केवल लकड़ी को आकार दिया है, बल्कि उसमें अपनी संस्कृति, परंपरा और आत्मा को भी उकेरा है।

पिछले **10 वर्षों** से वे लकड़ी से पारंपरिक मूर्तियाँ बना रहे हैं — बिना किसी मशीन, बिना बिजली। बस कुछ साधारण औजार और बहुत सारा समर्पण। उनकी मूर्तियों में **बिरसा मुंडा**, **गिरिया रानी**, **काजल माता**, **स्कूल जाते बच्चे** और पुराने समय में अनाज तौलने के उपकरण **पाली और पुवाली** जैसे जीवंत रूप दिखाई देते हैं।

उनकी यह कला केवल शिल्प नहीं, एक **जीवंत इतिहास** है। एक समय था जब गांवों में कोई तराजू नहीं होता था, तो लोग लकड़ी से बने इन उपकरणों से अनाज तौलते थे। आज जब वह उन forgotten tools को फिर से बनाते हैं, तो वह **भूले-बिसरे ज्ञान** को पुनर्जीवित कर रहे हैं।

रतनभाई खुद ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं हैं, लेकिन उनकी कला में **गहरी समझ**, **संवेदना** और **नवाचार** है। एक मूर्ति को बनाने में उन्हें **5 दिन** लगते हैं और वह उसे एक **सजावटी शोपीस** के रूप में बेचते हैं, जो केवल सुंदरता ही नहीं बल्कि **संस्कृति का दर्पण** होते है।

उनकी कहानी बताती है — नवाचार केवल तकनीक से नहीं, बल्कि **परंपरा और दिल से जुड़ी मेहनत** से भी जन्म लेता है।

हर कदम पर रंग, रेखा और संस्कृति का ऐसा संगम दिखा,
मानो हम एक अद्भुत कला-नगरी में प्रवेश कर गए हों।

भरत वरिया – आदिवासी आस्था के मूर्तिकार

देसींग राठवा

देसींग राठवा: पिथोरा के रंगों में रचा-बसा एक जीवन

देसींग राठवा एक समर्पित *लखारा* (पिथोरा चित्रकार) हैं, जो न केवल अद्भुत कलात्मकता से चित्र बनाते हैं, बल्कि पिथोरा को एक जीवंत परंपरा के रूप में जीवित रखे हुए हैं। उनकी कला केवल चित्र नहीं है, बल्कि यह उनके समाज की विविधता, सांस्कृतिक गहराई और आस्था की एक लिपि है — जो दीवारों पर बोलती है।

वे न सिर्फ सुंदरता से चित्र रचते हैं, बल्कि युवा पीढ़ी को भी इस कला में रुचि लेने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। युवा पीढी में भी अब उनके सान्निध्य में यह कला फिर से उभरने लगी है।

हाल ही में देसींग राठवा ने *ICCIG* में भाग लिया और वहाँ अपने पिथोरा चित्रों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनकी प्रस्तुति ने यह सिद्ध किया कि पिथोरा केवल पारंपरिक चित्रकला नहीं, बल्कि एक सोच, एक दर्शन और एक जीवंत परंपरा है।

आज के समय में जब यह आदिवासी कला धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है, देसींग राठवा इसे बचाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। उनका कार्य न केवल कला को संरक्षित कर रहा है, बल्कि नई पीढ़ी के लिए अपनी जड़ों से जुड़ने का माध्यम भी बन रहा है।

मेहुल राठवा

गुनाटा का उभरता कलाकार, जो बना प्रेरणा का स्रोत

गुनाटा गांव के स्कूल में पढ़ने वाले मेहुल राठवा एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी हैं, जो चित्रकला के माध्यम से अपने आत्मविश्वास को निखार रहे हैं। उन्होंने हाल ही में स्कूल में एक छोटी सी कला प्रदर्शनी लगाई, जिससे न केवल उनकी कला को पहचान मिली, बल्कि अन्य विद्यार्थियों को भी अपनी रचनात्मकता दिखाने की प्रेरणा मिली।

इस पहल से स्कूल का वातावरण भी सृजनात्मक बन गया है। मेहुल की इस प्रदर्शनी ने यह साबित किया है कि प्रतिभा को मंच मिले, तो वह औरों के लिए राह बना सकती है।

विद्यालय ने भी मेहुल की इस पहल को आगे बढ़ाने में सहयोग किया है और उनके कार्यों को प्रमोट करने का सराहनीय कार्य किया है। यह उदाहरण बताता है कि जब स्कूल और विद्यार्थी मिलकर कुछ रचनात्मक करते हैं, तो उसका असर पूरे समुदाय पर होता है।

Technological Innovations
&
Traditional Practice

श्री शिव शिवाय फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

गांव बामनिया, जिला – झाबुआ (मध्यप्रदेश)

लीला निनामा, मंजू वसुनिया और ललिता सिंगाड़

हमारी किसान उत्पादक कंपनी (FPC) "श्री शिव शिवाय फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड" की स्थापना वर्ष 2024 में की गई। इसका उद्देश्य किसानों को एकजुट कर कृषि उपज, विशेष रूप से कृषि अपशिष्ट, से मूल्यवर्धन और आय में वृद्धि करना है।

अलसी के डंठल (ठंठल) संग्रहण और विक्रय का कार्य

कंपनी गठन के बाद, हमें TRC संस्था द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। TRC के सहयोग से हमें एक ऐसी प्रोसेसिंग कंपनी से जोड़ा गया जो अलसी के डंठलों को खरीदती है। हमने अपने FPC के माध्यम से किसानों से अलसी के डंठल एकत्र करना शुरू किया।

वर्ष 2024–25 की उपलब्धियाँ:

इस वर्ष हमने कुल 2000 क्विंटल अलसी डंठल बाज़ार में बेचे हैं।वर्तमान में हमारे पास लगभग 50 क्विंटल डंठल शेष है। मूल्य के आधार पर इस वर्ष हम लाखों रुपये की आय अर्जित करेंगे। हमारा लक्ष्य है कि आने वाले वर्षों में यह आय करोड़ों तक पहुँचे।

मूल्य निर्धारण और लाभ

हम किसानों से डंठल की खरीद 5रू प्रति किलोग्राम की दर से खरिदते हैं। इसे हम 13रू प्रति किलोग्राम की दर से प्रोसेसिंग कंपनी को बेचते हैं। प्रति किलोग्राम हमें औसतन 7रू का लाभ (मार्जिन) प्राप्त होता है। इसमें संग्रहण, परिवहन और श्रमिकों का खर्च अलग से होता है, परंतु शुद्ध लाभ अब भी अच्छा रहता है।

प्रोसेसिंग एवं विपणन हमारा एकत्रित किया गया संपूर्ण माल गुजरात भेजा जाता है। गुजरात में इसकी प्रोसेसिंग की जाती है, जिससे फाइबर, बोर्ड या अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद बनते हैं।

शिव शिवाय फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

गांव- बामनिया, जिला - झाबुआ, मध्यप्रदेश, मोबाइल: 79995 42224

सेजल राठवा: केले (बनाना) के फाइबर से शुरू हुआ एक नवाचार और महिलाओं के लिए बन रहा है रोज़गार का रास्ता

सेजल राठवा ने एक अनोखी पहल की शुरुआत की – **केले के फाइबर** (Banana Fiber) से सुंदर और टिकाऊ **डायरी** बनाई। जहाँ लोग केले के डंठल को फेंक देते हैं, वहीं सेजल ने उसमें अवसर देखा और **पर्यावरण-संवेदनशील नवाचार** की दिशा में कदम बढ़ाया।

आज सेजल की बनाई हुई डायरियाँ **रू 400 से रू 600** के बीच बिकती हैं। उन्होंने **"भाषा" संस्था** के साथ मिलकर अपने व्यवसाय को और अधिक सशक्त बनाया है। उनकी मेहनत और दृष्टि ने उन्हें एक **स्थानीय उद्यमी** से एक **महिला प्रेरणा स्रोत** बना दिया है।

अब उनका अगला लक्ष्य है इस व्यवसाय को **बड़े स्तर पर ले जाना** और इससे **कई अन्य महिलाओं को रोजगार** दिलाना। सेजल का मानना है कि "संसाधन की कमी नहीं, सोच की उड़ान चाहिए।"

उनका यह प्रयास न केवल **पर्यावरण के लिए हितकारी** है, बल्कि **ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण** की दिशा में भी एक मजबूत कदम है।

हरीश पावर जी – सम्पर्क संस्था

संपर्क संस्थान, पेटलावद, झाबुआ के पास **196 प्रकार की देशी बीजों की प्रजातियाँ** संरक्षित हैं — जिसमें:

- **32 प्रकार की गेहूं की प्रजातियाँ**
- **कई किस्में सब्ज़ियों (**टमाटर, भिंडी, बैंगन, लौकी, मिर्च आदि की परंपरागत किस्में**), दालों (**मूंग, उड़द, अरहर, चना आदि की देसी किस्में**) और मिलेट्स (मोटा अनाज)** की भी शामिल हैं।

यह न केवल **कृषि जैव विविधता** का बड़ा भंडार है, बल्कि **जलवायु अनुकूल खेती**, **पोषण सुरक्षा**, और **कृषि आत्मनिर्भरता** की दिशा में एक बड़ा योगदान भी है।

प्रक्रिया

अलग-अलग **गेहूं की वैरायटी** को उगाने के बाद, एक **बैठक बुलाई जाती है**।
सभी किस्मों के गेहूं के नमूने **टेबल पर रखे जाते हैं**।

किसानों को **धागा दिया जाता है**, जो वे अपनी पसंदीदा वैरायटी पर बाँधते हैं।
सबसे अधिक धागे वाली वैरायटी को **आगामी फसल के लिए चुना जाता है**।

हरीश पावर जी - जैविक प्रेरक

- 53वीं शोधयात्रा की तैयारी में संपर्क संस्था **के हरीश पावर जी** से मुलाकात हुई, जो किसानों को जैविक उत्पादन और विकेंद्रित व्यवस्था से स्वयं जैविक उत्पाद बनाने हेतु प्रेरित कर रहे हैं। शोधयात्रा में इन नवाचारी किसानों से मिलने का अवसर मिला। इस माध्यम से अपना खेती खर्च कम कर रहे है।

हरियाली हांडी: मिट्टी, मेहनत और नवाचार की कहानी

नायक, भील और धानुक समुदाय

गुजरात के छोटा उदैपुर ज़िले की **नायक, भील और धानुक** समुदायों ने मिट्टी के बर्तनों को एक नई पहचान दी है। वे पारंपरिक तरीके से **हांडी बनाते हैं**, और उस पर **प्राकृतिक लाख की कोटिंग** करके उसे **नॉन-स्टिक बर्तन** में बदल देते हैं — वह भी बिना किसी रसायन के।

यह लाख, **पोहीम पेड़ों पर पाए जाने वाले कीड़ों** से प्राप्त की जाती है। इसे पारंपरिक विधि से **दो बार उबालकर एक लेप** तैयार किया जाता है, जो गर्म बर्तनों पर लगाया जाता है। यह घोल मिट्टी में समाकर बर्तन को **चमकदार, खरोंच-रहित और पूरी तरह टॉक्सिन-फ्री** बना देता है।

इन हांडियों में **कम तेल में स्वादिष्ट खाना पकता है**, और कोई रासायनिक कोटिंग की ज़रूरत नहीं होती। यह तकनीक न सिर्फ **स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित**, बल्कि **पर्यावरण के लिए भी लाभकारी** है।

जब कोई ग्राहक हांडी हाथ में लेकर कहता है – *"ये तो असली नॉन-स्टिक है!"* – तब इन कारीगरों की आँखों में **गर्व और आत्मसम्मान की चमक** होती है। **शोधयात्रा के दौरान**, हमारे शोधयात्रियों ने जब इन बर्तनों को खरीदा, तो उन्होंने न केवल एक प्रोडक्ट लिया, बल्कि **एक परंपरा, एक नवाचार और एक जीवंत संस्कृति को भी अपनाया।**

यह कहानी सिर्फ एक बर्तन की नहीं, बल्कि **मिट्टी से जन्मी क्रांति**, **लोक ज्ञान और आधुनिक सोच** के मिलन की मिसाल है।

सुरजमुखी के बिज मे नवाचार

सुरेंद्रपालसिंह चौहान जी की खास किस्म

खेती में मेहनत और नवाचार का एक अनोखा उदाहरण पेश किया है। सुरेंद्रपालसिंह चौहान जी ने। उन्होंने सूरजमुखी की एक ऐसी विशेष किस्म विकसित की है, जिसमें एक ही पौधे पर **दो से अधिक फूल** आते हैं।
इस किस्म की खासियत है कि इससे **पैदावार में उल्लेखनीय बढ़ोतरी** हुई है। चौहान जी ने इस वैरायटी को बनाने में **लगातार 3 से 4 वर्षों तक मेहनत** की, चयन और संवर्धन के पारंपरिक तरीकों से इसे तैयार किया।

उनका यह प्रयास किसानों के लिए एक प्रेरणा है — कि यदि लगन और धैर्य हो, तो परंपरागत खेती में भी नवाचार संभव है।

तेरेसिंह बारचा जी का संकल्प

तेरेसिंह बारचा, मध्यप्रदेश के पेटलावद क्षेत्र के एक समर्पित किसान हैं, जिन्होंने खेती को केवल आजीविका नहीं, बल्कि परंपरा और धरोहर के रूप में सहेजा है। जब अधिकांश किसान अधिक उत्पादन की दौड़ में हाइब्रिड बीजों की ओर बढ़ रहे हैं, तेरेसिंह जी ने मक्का और मूंग की पारंपरिक वैरायटी को बचाकर रखा है।

उनका मानना है
"मेरे पास जो पारंपरिक बीज हैं, वो सिर्फ स्वाद में ही बेहतर नहीं हैं, बल्कि कम बारिश में भी अच्छी पैदावार देते हैं। यही असली बीज हैं, जो पीढ़ियों से हमारे खेतों की पहचान रहे हैं।"

उन्होंने न केवल इन बीजों को वर्षों से **संभालकर रखा**, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक कृषि-संस्कृति की विरासत भी सहेजी है।

"नूरजहां" आम की वैरायटी को मध्य प्रदेश के अलीराजपुर ज़िले के कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में उगाया जाता है। यह एक खास किस्म का आम है जो अपने विशाल आकार (एक आम का वजन 2 से 4 किलो तक) और शाही स्वाद के लिए जाना जाता है। इस आम को विशेष रूप से पहचान और लोकप्रियता दिलाने का श्रेय जाता है:

ईसाक मंसूरी कट्ठीवाड़ा के किसान ईसाक मंसूरी (Isak Mansuri) ने इस वैरायटी को सहेजा, संरक्षित और प्रचारित किया। उन्होंने वर्षों से इस किस्म की देखभाल और उन्नति में मेहनत की है। आज "नूरजहां" आम न सिर्फ मध्य प्रदेश, बल्कि देशभर में चर्चा का विषय बन चुका है।---

नूरजहां आम की विशेषताएं:

वजन: एक आम का वजन 2 से 4.5 किलोग्राम तक हो सकता है

स्वाद: मीठा, रसीला और शाही

नूरजहां आम — देश का सबसे दुर्लभ और भारी आम

स्थान: अलीराजपुर, मध्य प्रदेश
कीमत: रू 2000 प्रति फल तक
वजन: प्रति आम 3 से 4 किलोग्राम

उत्पादन सीमित मात्रा में, इसलिए बाज़ार में प्रीमियम मांग जून के अंत या जुलाई की शुरुआत में तैयार होता

अभी तक **नूरजहां आम (Noorjahan Mango)** को **GI (Geographical Indication) टैग** नहीं मिला है।

हालांकि, **मध्य प्रदेश सरकार** और **स्थानीय कृषि विभाग** इसकी **GI टैग के लिए प्रक्रिया में लगे हुए हैं**, ताकि इसे भौगोलिक पहचान मिल सके और इस विशिष्ट आम की पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर की जा सके।

अशोक किसान: पागलपन से परिवर्तन तक की यात्रा

गाँव का एक साधारण युवक, **अशोक**, हर साल होने वाले **हलमा त्योहार** में लोगों की मदद करता था। वहीं से उसमें एक बीज बोया गया – *"अगर हम एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं, तो अपनी मिट्टी की भी क्यों नहीं?"*

अशोक ने तय किया कि वह **रासायनिक खेती छोड़कर देसी और जैविक खेती** अपनाएगा। लेकिन यह रास्ता आसान नहीं था।

लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया, यहाँ तक कि उसके **माता-पिता से कहा कि 'अशोक पागल हो गया है'**।

उसे एक अलग, बंजर खेत दे दिया गया – ताकि वह वहीं अपने प्रयोग करता रहे।

लेकिन अशोक रुका नहीं।

उसने गाय के गोबर से **जीवामृत**, **देशी बीज**, **केचुआ खाद**, और **प्राकृतिक तरीकों** से उस ज़मीन को उपजाऊ बना दिया।

धीरे-धीरे खेत लहलहाने लगा... और लोगों की सोच भी बदलने लगी।

अब अशोक को उसके पिताजी से ज्यादा दाम मिलते हैं।

वह **मास्टर ट्रेनर** बन चुका है।

कई **विद्यार्थी, किसान और युवा** उससे सीखने आते हैं।

अशोक का सपना है कि **गरीब ज़हर न खाए, किसान बीमार न पड़े** और हर खेत फिर से **मिट्टी की महक से जिए।**

आज गाँव वही है, खेत वही है...पर सोच बदल चुकी है।

दुलेसिंह भूरिया

- **दुलेसिंह** पिछले 5 सालों से 2 बीघा में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं, जहाँ मलचिंग, ड्रिप सिंचाई और जैविक तरीकों से वे कई तरह की सब्जियाँ उगाते हैं और सालाना **1 लाख** रुपये तक कमाते हैं। शुरुआत में परिवार का विरोध था, लेकिन अब पूरा सहयोग मिल रहा है और वे अन्य किसानों को भी प्रेरित कर रहे हैं।

प्रयोगधर्मि किसान चेतन पचाया

चेतन पचाया एक ऐसे किसान हैं जो पारंपरिक खेती के दायरे से बाहर निकलकर हमेशा कुछ नया करने की कोशिश करते हैं। उनके इलाके में जहां पहले कभी केले की खेती नहीं हुई थी, वहां उन्होंने 1300 केले के पौधे लगाकर पहली बार यह प्रयोग किया। यह एक साहसी कदम था, जो अब उम्मीदों की फसल बन रहा है।

चेतन भाई सिर्फ फसलों तक ही सीमित नहीं हैं। उन्होंने अपने क्षेत्र में गुजरात की गिर नस्ल की गायों की गोशाला स्थापित की है, जबकि स्थानीय देशी गायें बहुत कम दूध देती थीं। इससे न केवल दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हुई, बल्कि स्थानीय लोगों को भी एक नया उदाहरण मिला। इसके अलावा उन्होंने अपने खेत में विभिन्न प्रकार के फलदार पेड़ भी लगाए हैं – जिससे खेती को विविधता और आर्थिक स्थिरता दोनों मिलती है। सबसे खास बात यह है कि वो अपना अधिकतर समय खेत में ही बिताते हैं। वो मानते हैं कि ज़मीन से जुड़कर ही असली समाधान निकलता है।

कलमसिंह डावर गांव:- छोटी पोल, तहसील :- भावरा अलीराजपुर

हम ने कमलजी के खेत की मुलाक़ात की तो छोटी जगह में उन्होंने बगीचा बनाया है। उन्होंने गुजरात खेती करने के लिए गए और वहां की खेती को देख कर यहां पर बागबानी शुरू किया।

आंतर फसल कृषि पद्धति का प्रयोग

1) ड्रेगन फ्रूट, नेनुआ और अरहर (2) ड्रेगन फ्रूट, नेनुआ और चंदन (3) ड्रेगन फ्रूट, भिंडी और चोली (4) आम, नेनुआ और मक्का (5) नींबू और नेनुआ, बोर्डर पर कटहल और नारियल की बोर्डर लगाई है।

विशाल परमार
पानी और बिजली से वेल्डिंग मशीन

"विशाल परमार एक प्रतिभाशाली युवा इनोवेटर हैं, जिनमें एक वैज्ञानिक बनने की पूरी क्षमता है। उन्होंने पानी और बिजली की मदद से एक वेल्डिंग मशीन का निर्माण किया है। कदवाल गांव में हुई बैठक में इस नवाचार पर चर्चा हुई, जिसके बाद विजय उन्हें करेली महुदी लेकर आया, जहाँ विशाल ने अपने इस संशोधन का प्रायोगिक प्रदर्शन किया।“

अगर आप इसे और संक्षिप्त रूप में चाहते हैं, तो यह रहा

"युवा इनोवेटर विशाल परमार ने पानी और बिजली से वेल्डिंग मशीन बनाई। कदवाल गांव की बैठक में चर्चा के बाद विजय उन्हें करेली महुदी लाया, जहाँ उन्होंने प्रैक्टिकल प्रदर्शन किया।"

वेल्डिंग मशीन का प्रोटोटाइप

धुमने फिरने वाला हवाई पंप

एक कदम समाधान की ओर

प्रोटोटाइप (प्रारंभिक मॉडल) - 1

प्रोटोटाइप (प्रारंभिक मॉडल) - 2

प्रोटोटाइप (प्रारंभिक मॉडल) - 3

हज़ारों वर्षों से आदिवासी समुदाय महुआ के बीजों को एक-एक कर पत्थरों से तोड़ते आ रहे हैं। यह प्रक्रिया न केवल कठिन है, बल्कि समय और श्रम-साध्य भी है। जब यमुनानगर (हरियाणा) के राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्री धर्मवीर शोधयात्रा के माध्यम से झाबुआ, अलीराजपुर और छोटाउदेपुर जैसे आदिवासी अंचलों में पहुँचे, तो उन्होंने इस कठिनाई को निकट से देखा और गहराई से महसूस किया। यह पीड़ा उन्हें भीतर तक झकझोर गई। उन्होंने पहले तो एक बिजली से चलने वाली मशीन का निर्माण किया, किंतु जल्द ही यह समझ गए कि गरीब आदिवासी क्षेत्रों में बिजली की अनुपलब्धता एक बड़ी बाधा है। अतः उन्होंने अथक परिश्रम से एक हाथ से चलने वाली, सरल और किफायती मशीन तैयार की, जो बिना बिजली के महुआ बीजों को कुशलता से तोड़ सकती है। हम सभी के चारों ओर अनेक समस्याएं मौजूद हैं, किंतु प्रायः हम उन्हें स्वीकार कर जीने के आदी हो जाते हैं। यदि हम उनके समाधान पर सोचें, तो वह संभव अवश्य हैं। धर्मवीर जैसे समाज के प्रति संवेदनशील नवाचारक ही हमें यह राह दिखाते हैं। ऐसे लोग न केवल देश को, बल्कि पूरे विश्व को बदलने की क्षमता रखते हैं।

सृष्टि संस्था के साथियों के साथ मिलकर धर्मवीर ने विभिन्न गाँवों में जाकर न केवल इस मशीन का प्रदर्शन किया, बल्कि वहाँ के लोगों से उनके अनुभव और आशीर्वाद भी प्राप्त किए। आज छोटा उदेपुर, अलीराजपुर और दाहोद में महुआ बीज तोड़ने की मशीन का सफल प्रदर्शन किया गया। मशीन की सफलता दर लगभग 80% रही। कुछ बीज आवश्यकता से अधिक टूट रहे थे और अत्यंत छोटे महुआ फल पूरी तरह से नहीं टूट पाए। इसके बावजूद स्थानीय ग्रामीणों ने प्रसन्नता व्यक्त की और उपयोगी सुझाव दिए

1. महुआ फल डालने की जगह कुछ बड़ी होनी चाहिए।
2. बीज बहुत छोटे टुकड़ों में न टूटें

इसका विशेष ध्यान रखा जाए। धर्मवीर इन सुझावों के आधार पर अब दूसरे मॉडल में आवश्यक सुधार करेंगे, ताकि यह मशीन और अधिक प्रभावी और उपयोगी सिद्ध हो सके। गाँव के लोगों ने भावुक होकर कहा "जिस व्यक्ति के गाँव में महुआ का एक भी पेड़ नहीं है, वह हमारे लिए महुआ की मशीन बना रहा है। यह हमारे लिए गर्व की बात है।

Educational Innovations

उदय बिलवाल

“वो सपना जो मेरा था, अब झाबुआ के हर युवा का है” – उदय बिलवाल की कहानी
झाबुआ जिले के एक छोटे से गांव पिपलीपाड़ा में जन्मे उदय बिलवाल का बचपन से ही सपना था – वर्दी पहनकर देश की सेवा करना। उनके पिताजी एक शिक्षक थे, और शिक्षा के महत्व को उन्होंने बचपन से समझा। पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी गहरी रुचि रही, और झाबुआ कॉलेज का मैदान उनकी मेहनत का गवाह बना।
सन 2013 की बात है। एमपी पुलिस की भर्ती निकली थी। उदय जी ने देखा कि झाबुआ जिले के 120 से ज्यादा आदिवासी युवा इस भर्ती में शामिल हुए थे, लेकिन एक भी चयनित नहीं हुआ। वजह साफ थी – यहां किसी को सही मार्गदर्शन और प्रशिक्षण नहीं मिला। उस दिन उदय का सपना तो टूटा, लेकिन एक नया संकल्प जन्मा – "अगर मैं वर्दी नहीं पहन सका, तो झाबुआ के बच्चों को वर्दी पहनाकर देश सेवा में भेजूंगा।"
इसी सोच के साथ 2015 में उन्होंने नि:शुल्क सोल्जर फिजिकल एकेडमी झाबुआ की शुरुआत की। कोई फीस नहीं, कोई सुविधा नहीं, सिर्फ समर्पण और मेहनत। उन्होंने युवाओं को दौड़, गोला फेंक, लंबी कूद जैसे फिजिकल टेस्ट की तैयारी करवाई।
आज परिणाम सामने हैं – 410 से ज्यादा युवा सेना, पुलिस, अग्निवीर, जेल प्रहरी जैसी सेवाओं में चयनित होकर देश सेवा कर रहे हैं। आजादी के बाद पहली बार झाबुआ जिले से दो युवाओं का पैरा कमांडो में चयन हुआ – ये है उस सपने की असली जीत।
उदय बिलवाल का एक ही सपना है – “झाबुआ के हर घर से एक बेटा या बेटी देश सेवा में हो।”

सीमा त्रिवेदी जी

सीमा त्रिवेदी जी के नेतृत्व में PMC गर्ल्स स्कूल की छात्राओं की संख्या 2024 में **1100** से बढ़कर **1450** हो गई है।
एक्टिविटी-बेस्ड लर्निंग और बेहतरीन परिणामों के चलते उनकी छात्रा ने H.S.C **राज्य बोर्ड में दूसरा स्थान** पाया, जिससे स्कूल में दाखिले के लिए प्रतियोगिता हो रही है।

श्री रेणु कछावा

- **श्री रेणु कछावा** झाबुआ जिले के प्राथमिक विद्यालय ग्राम खंडियाखावल सहायक शिक्षक है। उन्होंने बच्चों को खेल-खेल में सीखने के लिए बहुत सारे TLM का निर्माण किया है। जिस बच्चो को पढ़ाई करने में मजा आता है। साथ में बच्चों को विभिन्न परीक्षा के माध्यम से आगे बढ़ाने का काम कर रही है।

मकवाना जगदीशभाई नाराणभाई — भवाई के माध्यम से शिक्षा का दीप जलाने वाले शिक्षक

स्थान: रोजकुवा प्राथमिक शाला, छोटा उदयपुर (गुजरात)

जगदीशभाई मकवाना एक नवाचारी (इनवेटिव) शिक्षक हैं, जो केवल किताबों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि बच्चों की शिक्षा को जीवंत और प्रभावशाली बनाने के लिए लगातार नए प्रयोग करते रहते हैं।

उनका सबसे अनोखा प्रयोग है — **भवाई** (गुजरात की पारंपरिक लोकनाट्य शैली) के माध्यम से शिक्षा और सामाजिक संदेश देना। वे न केवल बच्चों को पढ़ाते हैं, बल्कि उनके अभिभावकों को भी भवाई के ज़रिए यह समझाने का प्रयास करते हैं कि शिक्षा केवल डिग्री नहीं, बल्कि पूरे परिवार के भविष्य को सँवारने का माध्यम है।

जगदीशभाई जब किसी गांव में आमंत्रित किए जाते हैं, तो वे बच्चों की एक टीम तैयार कर वहाँ प्रस्तुतियाँ देते हैं। यह टीम शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दों पर आधारित भवाई प्रस्तुत करती है, जिससे न केवल बच्चे प्रेरित होते हैं बल्कि पूरे गांव में एक सकारात्मक प्रभाव पैदा होता है।

उनके इस अनोखे प्रयास की सराहना न केवल स्थानीय लोगों ने की है, बल्कि सरकार और मीडिया ने भी उन्हें सराहा है। उनका यह नवाचार वास्तव में यह दर्शाता है कि अगर शिक्षक चाहें, तो परंपरा और नवाचार का मेल कर के शिक्षा को एक जनांदोलन बना सकते हैं।

Hanging Illuminated Globe

जीतूभाई पटेल – सेवा और समर्पण की मिसाल

जीतूभाई पटेल वर्तमान में **गुनाटा प्राथमिक शाला** में एक समर्पित शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। उनका जीवन सफर अंत्यत प्रेरणादायक है। पहले वे पुलिस विभाग में **पीएसआई (PSI)** के पद पर कार्यरत थे। हालांकि यह एक प्रतिष्ठित पद था, लेकिन वहां उनका अधिकतर समय अपराधियों से ही संपर्क में बीतता था। उनके भीतर सदैव समाज के लिए सकारात्मक कार्य करने की भावना थी, इसलिए उन्होंने पुलिस की नौकरी छोड़ दी और शिक्षक के रूप में समाज सेवा का मार्ग चुना।
शिक्षण सेवा से जुड़ने के बाद जीतूभाई ने जिस विद्यालय में कार्यभार संभाला, उसे पूरी निष्ठा और परिश्रम से एक आदर्श विद्यालय के रूप में विकसित किया। आज उनकी स्कूल में **400 से अधिक छात्र** शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने विद्यालय को हराभरा बनाने, सुविधाओं से युक्त करने और वातावरण को बालकों के अनुकूल बनाने के लिए दिन-रात मेहनत की है।
उनकी प्रेरणा से छात्र **मेहुल** ने अपने कला-प्रेम को मूर्त रूप देते हुए विद्यालय में एक छोटा-सा **कलाम्यूज़ियम** स्थापित किया है, जो सभी के लिए प्रेरणास्पद है।

विद्यालय के कार्यों के अतिरिक्त, जीतूभाई समाजसेवा में भी सक्रिय रहते हैं। उन्होंने देखा कि अनेक सरकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंद लोगों तक नहीं पहुँच पा रहा है। तब उन्होंने स्वयं आगे आकर **450 महिलाओं को वृद्धावस्था पेंशन और विधवा पेंशन** योजनाओं से जोड़ा। आज उन प्रयासों के कारण **400 से अधिक महिलाओं को आर्थिक सहायता** प्राप्त हो रही है।
इन महिलाओं ने उनकी सेवा और समर्पण के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हें **100 ग्राम चांदी का कड़ा** भेट किया, जो उनके प्रति सम्मान और प्रेम का प्रतीक है।
जीतूभाई पटेल का जीवन यह दर्शाता है कि यदि मन में सेवा का संकल्प हो, तो व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में समाज में बदलाव ला सकता है। वे वास्तव में एक **आदर्श शिक्षक और समाजसेवी** हैं।

दिनेशभाई राठवा

दिनेशभाई राठवा — स्थानीय भाषा को समझने की सेतु बनाने वाले शिक्षक

दिनेशभाई राठवा एक दूरदर्शी और संवेदनशील शिक्षक हैं, जिन्होंने राठवा आदिवासी समुदाय की स्थानीय बोली की समस्याओं को समझते हुए एक बेहद महत्वपूर्ण पहल की है। राठवा बोली में कई ऐसे शब्द हैं जो सामान्य गुजराती भाषा से मेल नहीं खाते। इस वजह से जब बाहर से शिक्षक आदिवासी क्षेत्रों में पढ़ाने आते हैं, तो उन्हें भाषा की समझ में कठिनाई होती है। नतीजतन, बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती है और संवाद में अवरोध पैदा होता है। इस चुनौती को समझते हुए दिनेशभाई ने ऐसे शब्दों का संकलन किया जो सामान्यत: बाहर के शिक्षकों के लिए कठिन होते हैं। उन्होंने इन शब्दों का अर्थ सहित एक शब्द-सहायिका (बुकलेट) तैयार की। उनकी इस अनूठी पहल को भाषा केंद्र द्वारा प्रकाशित किया गया और कलेक्टर महोदय के सहयोग से यह पुस्तक सभी आदिवासी विद्यालयों में वितरित की गई। क्योंकि इन क्षेत्रों में हर साल नए शिक्षक आते हैं, और अक्सर स्थानीय भाषा की जानकारी नहीं होती, इसलिए अब कलेक्टर श्री स्वयं इन शिक्षकों को यह पुस्तक पढ़ने के लिए कहते हैं। इसके बाद उनकी परीक्षा भी ली जाती है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि शिक्षक बच्चों से उनकी मातृभाषा में संवाद कर सकें और उन्हें बेहतर तरीके से पढ़ा सकें। स्थानीय भाषा बच्चों के लिए न केवल समझने का माध्यम होती है, बल्कि उनके आत्मविश्वास का आधार भी बनती है। दिनेशभाई की इस पहल ने एक बड़ी समस्या का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किया है और शिक्षा में भाषाई समावेशिता को सशक्त बनाया है। वे वास्तव में एक भाषा सेतु का कार्य कर रहे हैं — जो शिक्षक और छात्रों के बीच की दूरी को मिटाकर शिक्षा को सुलभ और प्रभावशाली बना रहे हैं।

"जहाँ कोई जाना नहीं चाहता था, वहाँ रमणभाई ने भविष्य बसाया।“

गुजरात के हरपालपुर प्राथमिक शाला में कार्यरत रमणभाई राठवा ने वह कर दिखाया जो कई लोग सोचते तो हैं, लेकिन करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते। जब वे उस गाँव में पहुँचे, तो हालात बेहद कठिन थे। सरकारी कर्मचारी वहाँ जाना नहीं चाहते थे — क्योंकि गाँववाले खुद को सरकार समझते थे। कोई नियम नहीं, कोई व्यवस्था नहीं। लेकिन रमणभाई रुके नहीं। उन्होंने अकेले ही उस गाँव में बच्चों को पढ़ाना शुरू किया, जहाँ न स्कूल था, न कोई माहौल। धीरे-धीरे, उन्होंने न सिर्फ बच्चों को शिक्षित किया, बल्कि गाँव का पूरा माहौल बदल दिया। आज स्थिति यह है कि: अगर प्रशासन को गाँव में कोई काम करना हो, तो रमणभाई के सहयोग के बिना कुछ नहीं होता।

उन्होंने अपने निजी खर्च से 2 लाख रुपये खर्च कर एक बेहतरीन स्कूल तैयार किया।

अब उस गाँव में न केवल पढ़ाई हो रही है, बल्कि हॉस्टल से लेकर सभी ज़रूरी सुविधाएँ उपलब्ध हैं — वो भी एक शिक्षक की दूरदर्शिता और समर्पण से।

Oswal

निःस्वार्थ सेवा की मिसाल – निखिल भाई राठवा, रितेशभाई दरजी और चकाभाई की टीम

निखिल भाई राठवा, रितेशभाई दरजी और चकाभाई — ये तीनों साथी न केवल अपनी स्कूलों में बेहतरीन कार्य कर रहे हैं, बल्कि सीमावर्ती इलाकों की अन्य स्कूलों में भी ज़रूरतमंद बच्चों तक जरूरी सुविधाएं पहुँचाने का सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

अब तक इन्होंने 100 से अधिक स्कूलों में बच्चों के लिए स्कूल बैग, खेल सामग्री, नोटबुक, स्वेटर और कपड़े जैसी जरूरी वस्तुएँ पहुँचाई हैं। इन सभी वस्तुओं की अनुमानित लागत 1 करोड़ 13 लाख रुपये से अधिक है। यह डोनेशन वडोदरा के बैंक कर्मचारियों और चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के एक समर्पित ग्रुप द्वारा दिया जाता है, जो इस टीम पर पूरा भरोसा करता है कि उनका सहयोग सही जगह और सही हाथों तक पहुँच रहा है।

अपने निजी संसाधनों का भी इस कार्य में उपयोग हो रहा है — एक घर जिसे किराए पर दिया जा सकता था, उसे इस टीम ने स्टोरेज और डॉक्यूमेंटेशन ऑफिस में बदल दिया है, ताकि सारा कार्य व्यवस्थित ढंग से हो सके। पिछले तीन वर्षों से ये सभी लोग पूरी पारदर्शिता और निःस्वार्थ भाव से यह सेवा कर रहे हैं — यहाँ तक कि एक पेन तक अपने लिए उपयोग नहीं किया गया। सबसे पहले जरूरतमंद स्कूलों में सामान पहुँचाया जाता है, और सबसे आखिर में अपनी खुद की स्कूल के बच्चों तक। यह कार्य केवल सेवा नहीं, बल्कि बच्चों के भविष्य को संवारने की सच्ची कोशिश है।-

Protico

SHREE
KRISHNAM
FOUNDATION
Registered Number : F/3484/Vadodara

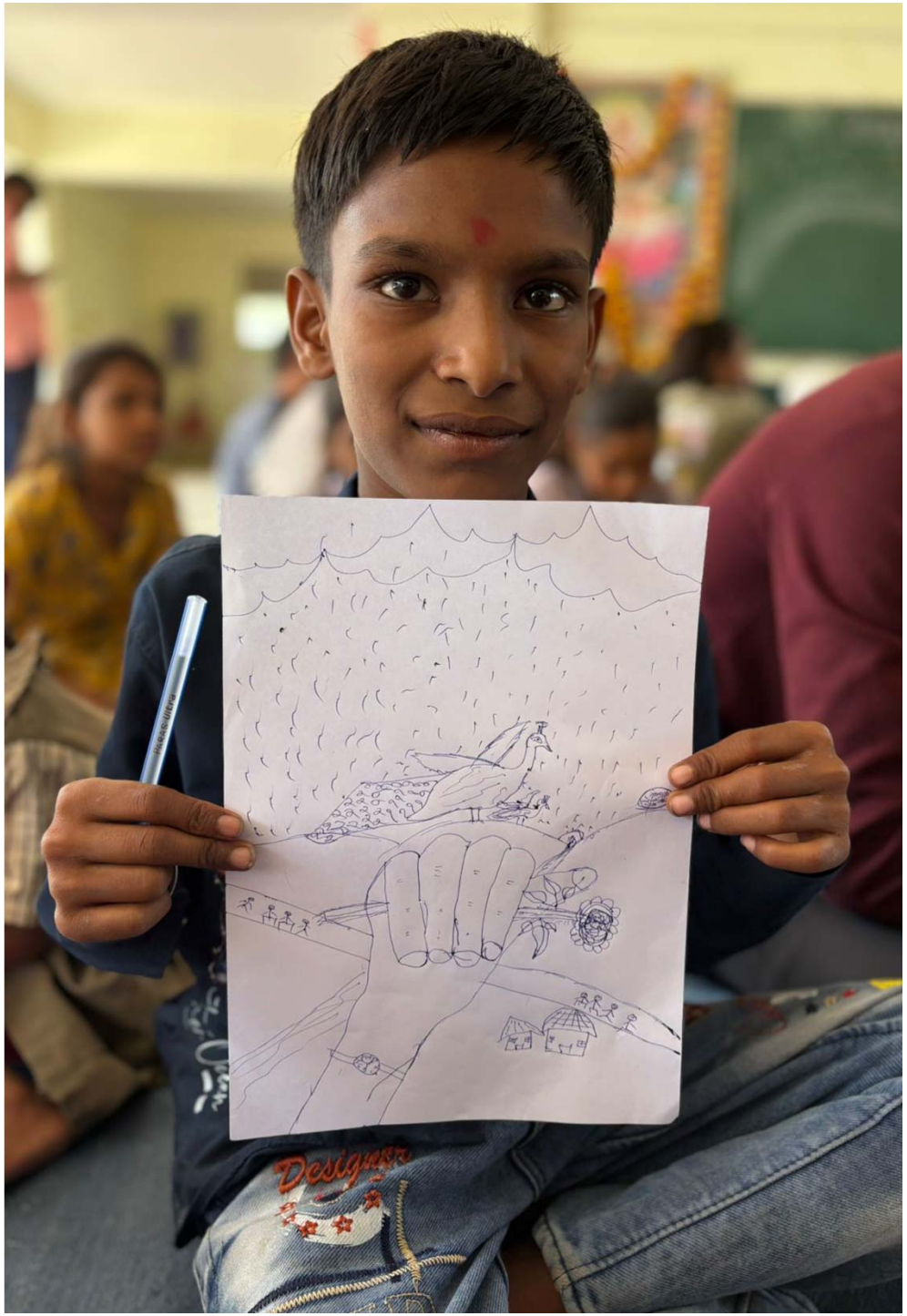

आदेश की संवेदनशीलता — प्रकृति से सीखने का समय

रंगपुर प्राथमिक विद्यालय (छोटा उदयपुर) के कक्षा 6 में पढ़ने वाले आदेश ने एक अनोखी बात देखी

एक मोर के बच्चों (चूज़ों) और उनके खाने के बीच एक नदी आ रही थी। तब उसने सोचा,

"शायद गांववालों को उसके खाने को उसके पास लाना चाहिए...“

आदेश की यह सोच सिर्फ करुणा नहीं थी — यह प्रकृति की ज़रूरतों को समझने की एक नई दृष्टि थी।

रिंकू राठवा — आने वाले कल की हरमनप्रीत कौर!

53वीं शोधयात्रा के दौरान, 8 जून को हमारा ठहराव गुनाटा स्कूल में हुआ था। उस दिन हमने लगभग 21 किलोमीटर की पदयात्रा पूरी की थी, जिससे सभी थक चुके थे। लेकिन हमारे युवा शोधयात्री *अक्षर वसानी* की ऊर्जा में कोई कमी नहीं थी — वे उसी उत्साह से बच्चों के साथ खेलते रहे।

इसी बीच एक नन्हीं बच्ची ने अपने अद्भुत खेल कौशल से सबको चौंका दिया। उसकी चुस्ती, गेंद पर पकड़ और शॉट मारने की शानदार शैली ने हर किसी को मंत्रमुग्ध कर दिया। उसका नाम था — **रिंकू राठवा**।

उसकी खेल भावना और शैली को देखकर ऐसा लगा की हम उसे भविष्य की *हरमनप्रीत कौर* को खेलते हुए देख रहे हों।

2.5 मिनट में बना कमाल गुनाटा के दो बच्चों से मिली सीख

शोधयात्रा का वो दिन हमेशा याद रहेगा। हम गुनाटा के रास्ते पर पैदल चल रहे थे। पसीना बह रहा था, लेकिन जिज्ञासा और उम्मीद हर कदम के साथ बढ़ रही थी। तभी एक जगह दो छोटे बच्चे मिट्टी में कुछ बिखरे सामान के साथ बैठे दिखे कोल्ड ड्रिंक की बोटल और ढक्कन, टूटे चप्पल तार और लकड़ी के टुकड़े।
हमने पास जाकर पूछा “क्या बना रहे हो?

”बच्चे मुस्कराए और बिना कोई जवाब दिए, अपने काम में लग गए। सिर्फ 2 मिनट 30 सेकंड बाद उनके हाथ में एक चलती-फिरती खिलौना गाड़ी थी — जिसे धक्का देते ही वो इधर-उधर दौड़ने लगी।

हमारे साथ चल रहे ।।T के छात्र यह सब देखकर चकित रह गए। राजकुश ने गर्व से कहा, “इन्होंने ये गाड़ी अभी हमारे सामने 2.5 मिनट में बना दी।”।।T के छात्र ने मुस्कराते हुए जवाब दिया: "हम ऐसा खिलौना बनाने में दो दिन लगाते हैं...

"वो पल मौन था — लेकिन बहुत कुछ कह रहा था। बिना किसी प्रशिक्षण, संसाधन या तकनीकी सुविधा के इन बच्चों ने जो बना दिया, उसने हमें यह सिखा दिया कि नवाचार केवल डिग्री से नहीं, जिज्ञासा और कल्पना से जन्म लेता है।

Institutional Innovation

कमलेशजी पटेल

- कमलेशजी पटेल, व्यापारी महासंघ और बाकी सहयोगियों ने मिलकर झाबुआ में की हाथीपाव घाटी पर **5000** पेड़ लगाए और उसका जतन किया और आज पक्षीओ के लिए भी बहुत बड़ा काम किया है। उन्होंने वहा लोग आए उसके लिए भी काम किया है। पशु पक्षियों के लिए पानी की ओर उनके भोजन की पूरी व्यवस्था किया है।

महेंद्र शर्मा और प्रफुलजी शर्मा

- **महेंद्र शर्मा और प्रफुलजी शर्मा** ने गुड मॉर्निंग क्लब के माध्यम से **35 से 65** साल के लोगो को हेल्थ के प्रति उजागर किया है। क्लब के मध्य से यह महिलाओं नेशनल लेवल तक अपनी प्रतिभा दिखाने में सफल हुई है।

गुडमार्निंग क्लब ने मनाया अपना रजत जयंती समारोह

नियमित योगाभ्यास एवं कसरत तथा टहलने से बीमारिया कोसों दूर रहती है तथा मनुष्य का जीवन आनन्दमय हो जाता है: डॉ. एम किराड़

झाबुआ ■ राज न्यूज नेटवर्क

गुड मार्निंग क्लब द्वारा मंगलवार 12 मार्च को क्लब का 25 वां रजत जयंती स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। सुखद संयोग यह भी रहा कि इसी दिन गुड मोर्निंग क्लब के अध्यक्ष श्री महेन्द्र शर्मा का भी 64 वां जन्म दिन होने से यह समारोह सोने में सुहागा का आभास दे गया। स्थानीय पीजी कालेज मैदान पर मुख्य अतिथि डा0 एम किराड की गरीमामय उपस्थिति में आयोजित समारोह में सभी उपस्थित सदस्यों एवं महिला गुड मोर्निंग क्लब की सदस्याओं ने प्रातः 7 बजे श्रीमती प्रफुल्ल शर्मा के नेतृत्व में केक काट कर गुड मोर्निंग क्लब के स्थापना दिवस एवं क्लब के अध्यक्ष महेन्द्र शर्मा का जन्म दिन उल्लास के साथ मनाया।

महिला विंग का हुआ गठन

इस अवसर पर श्री शर्मा ने कहा कि गुड मार्निंग क्लब की स्थापना का उद्देश्य ही योगाभ्यास के साथ ही खेल गतिविधियों एवं रचनात्मक कार्यों के उद्देश्य के लिये की गई थी। उन्होने बताया कि प्रारंभिक दिनों में 21 वर्ष पूर्व कॉलेज मैदान पर कमलेश शर्मा, सुबोध पेंटर, राजेन्द्र सोनी, कमलेश पटेल, सचिन बैरागी, योगेंन्द्र चौहान, महेन्द्र शर्मा, एडवोकेट अशोक राठौर, जितेन्द्र

श्री शर्मा के जन्मदीन पर सदस्यो ने दी बधाईया।

सोलंकी, उद्योग विभाग के महाप्रबंधक अमरसिंह मोरे, पत्रकार यशवंत पंवार, भूपेन्द्र गौड, अखिलेश मुलेवा, सरदारसिंह चौहान, स्वर्गीय चेतन परमार, स्वर्गीय दयाराम पटेल, आदि लोग नियमित रूप से कालेज मैदान पर योगाभ्यास करने, मार्निंग वॉक करने, खेल गतिविधि आदि के लिये आते रहे। तत्समय सभी ने एकमत से निर्णय लेकर गुड मार्निंग क्लब का गठन कर उसकी जिम्मेदारी उन्हें सौंपी थी। तब से आज तक गुड मोर्निंग क्लब सतत सक्रियता से चल रहा है और अब क्लब में पिछले 5 वर्षों से महिला विंग भी गठित होकर **'सबका स्वास्थ्य सबका आरोग्य'** महामंत्र को साकार किया जा रहा है।

मुख्य अतिथि डा.एम.किराड ने अपने आशीर्वचन में गुड मार्निंग क्लब की सराहना करते हुए कहा कि वे स्वयं भी इस क्लब से प्रेरित होकर प्रतिदिन 6 बजे ही कालेज मैदान पर आकर योगाभ्यास, के साथ ही यहां स्थापित जीम में अभ्यास करते है। उन्होने कहा कि नियमित योगाभ्यास एवं कसरत तथा टहलने से बीमारिया कोसों दूर रहती है तथा मनुष्य का जीवन आनन्दमय हो जाता है। उन्होने क्लब अध्यक्ष श्री महेन्द्रशर्मा को जन्म दिवस की बधाईयां देते हुए कहा कि उनके प्रखर मार्गदर्शन में ही क्लब रचनात्मक, समाजसेवा एवं योगादि के क्षेत्र मे सतत प्रगति पथ पर अग्रसर है। उन्होने क्लब की रजत जयंती पर उपस्थित 200 से अधिक लोगों को शुभकामनायें देते हुए क्लब से सतत संपर्क बनाने का आव्हान किया।

इस अवसर पर महिला विंग की अध्यक्षा श्रीमती प्रफुल्ल शर्मा ने कहा कि योग और खेल का सम्बन्ध पुरातन युग से चला आ रहा है, योग आज के भौतिक युग में अति आवश्यक है और यहां के सभी सदस्य खेल खेल में योग ही तो करते हैं। उन्होने योग और खेल की महत्ता का बखान करते हुए बताया कि योग भारतीय प्राचीन संस्कृति का हिस्सा रहा है। ऋषि मुनियों के शोध पर आधारित समग्र स्वास्थ्य का विज्ञान है योग। भारत के इस ज्ञान को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयासों से विश्व स्तरीय मान्यता मिली है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा योग को स्वीकार किया गया है। योग संपूर्ण मानवता को प्राप्त अमूल्य उपहार है।

क्लब का 25 वां रजत जयंती स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

गुड मार्निंग क्लब के सदस्यों ने क्लब का 25 वां रजत जयंती स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया इस अवसर पर क्लब के अध्यक्ष महेन्द्र शर्मा का पुष्पगुच्छों एवं पुष्पमालाओं से जन्म दिन के अवसर पर स्वागत सम्मान किया। इस अवसर पर अखिलेश मुलेवा, कमलेश शर्मा, दिनेश बघेल, आशीष सोलंकी, पर्वतसिंह राठौर, प्रितेश जैन, महेशचन्द्र शाह, राजवीर चौधरी, एडवोकेट राजेन्द्र संघवी, राजेश भावसार, वीरेन्द्र सिसौदिया, सुशील सिसौदिया, अनील पटेल, रेमसिंह डामोर,जीतेन्द्र शाह, भव्य जैन, के अलावा महिला विंग की अर्चना राठौड़, सुनीता राठौड़, नविता गुप्ता, राखी शाह, गुलाबी डामोर,रेशमा डामोर,कुसुम कनेश, विनीता रॉय,रूबी रॉय, शर्मिला कोठारी,चंदा यादव, सिमरन, बिमलेश, वंदना शाह, नैना, गुड़िया,मेघा, मनीषा गुर्जर के अलावा सोल्जर फिजिकल ग्रुप के करीब 50 से अधिक युवकों एवं बच्चों ने उक्त कार्यक्रम में सहभागिता की तथा सभी ने शर्मा के जन्म दिन की बधाईया देते हुए उनके आरोग्यमय दीर्घ जीवन की कामना की।

Social Innovations

राजेन्द्र श्रीवास्त

राजेन्द्र श्रीवास्त ने 20 सालों से मानसिक रूप से बीमार और असहाय लोगों को ढूंढ कर 10 राज्यों के करीबी 800 से अधिक लोगों में से 500 से अधिक लोगों को अपने परिवार के साथ मिलाया है। 300 लोगो को अलग-अलग आश्रम में पहुंचने में सफल हुए हैं। आसपास हेल्थ के लिए जो भी समस्या है। उनको सुलझाने के लिए पूरा काम करते हैं। आज भी राजेंद्रजी की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत नहीं है। लेकिन वो अपने कार्यों में लगे हुवे हैं। उनके पास अच्छी गाड़ी भी नहीं है। आप किसी को इस सेवा कार्य में मदद करना चाहते हो तो जरूर हमारा संपर्क करे।

समाज के सारथी

इस सप्ताह... ग्रामीण वनवासी संघ, मेघनगर

बीस साल से मानसिक रूप से विक्षिप्त और असहाय लोगों की कर रहे हैं मदद

मदद के बारे में... बिछड़े हुए को परिजन से भी मिलवा रहे

झाबुआ | जिले के मेघनगर में रहने वाले राजेंद्र श्रीवास्तव (नीरज) 20 सालों से मानसिक रूप से विक्षिप्त और असहाय लोगों की मदद कर रहे हैं। वे बिछड़े हुए को भी उनके परिजन से मिलवा रहे हैं। देश के करीब 10 राज्यों के करीब 500 लोगों को वे उनके घर पहुंचा चुके हैं। ये काम अनवरत जारी है।

अक्सर मानसिक रूप से विक्षिप्त लोग यहां वहां नजर आते हैं। इनमें कई अनजान लोग ऐसे होते हैं जो सड़क पर रहते रहते बुरी तरह बीमार हो जाते हैं। यहां तक कि उनके शरीर में फफोले और कीड़े भी पड़ जाते हैं। ऐसे लोगों की मदद के लिए कोई आगे नहीं आता, लेकिन राजेंद्र श्रीवास्तव करीब 20 साल से ऐसे ही लोगों की मदद कर रहे हैं। वे कहते हैं जिनका कोई नहीं होता ऐसे लोगों के लिए मैं सदा तैयार

असहाय लोगों की सेवा राजेंद्र श्रीवास्तव निस्वार्थ भाव से कर रहे हैं।

संध्या कुलकर्णी

- साध्यजी **प्रकृति** प्रेमी है। जिन्होंने अपने जीवन में बहुत सारे कार्य किया है। साइकलिंग कर के उन्होंने अपनी जीवन को स्वस्थ रखने का काम कर रहे हैं। एक दिन में 123 किमी और 2 घंटे और 25 मिनिट में 25 किमी साइकलिंग का रिकॉड बनाया है।

झाबुआ-आलीराजपुर पत्रिका

प्राइम

मेघनगर . रानापुर . पेटलावद . थांदला . जोबट . चंद्रशेखर आजाद नगर

patrika.com पत्रिका. इंदौर, मंगलवार, 03 जून, 2025

62 साल की संध्या के जीवन में साइकिल लेकर आई 'नया सवेरा'

पत्रिका डे-स्पेशल विश्व साइकिल डे

झाबुआ@पत्रिका. मन में जुनून हो तो कोई भी मंजिल मुश्किल नहीं। कुछ ऐसे ही जज्बे का जीवन्त उदाहरण हैं 62 वर्षीय संध्या कुलकर्णी। उम्र के इस पड़ाव में साइकिल चलाने का शौक पूरा कर रही हैं। वे प्रतिदिन 20 किमी साइकिल चलाती हैं। एक दिन में 118 किमी की दूरी भी तय कर चुकी हैं। दरअसल, एक दिन बेटे आदित्य से ऐसे ही कह दिया कि वे साइकिल चलाने का शौक पूरा करना चाहती हैं। बेटे ने उनके 60वें जन्मदिवस पर साइकिल का उपहार दिया। शुरुआत में साइकिल पर खेलेंस करना और घाट एरिया व ढलान पर चलाना मुश्किल था, लेकिन निरंतर प्रयास से पारंगत हो गई।

वर्चुअल स्पर्धा में सहभागिता

संध्या कुलकर्णी ने बताया कि सोशल मीडिया से उन्हें कुछ वर्चुअल प्रतियोगिता की जानकारी मिली। ऐसे में वर्ष 2022 में पहली बार कारगिल से कन्या कुमारी तक 4521 किमी की स्पर्धा के लिए पंजीयन कराया। इसमें हर दिन एक निश्चित समय में निर्धारित दूरी तय करना होती है। उन्होंने प्रतिदिन सुबह इस टास्क को पूरा कार्य करते हुए सीमित अवधि में सफलता हासिल की। इसके बाद तो सोशल मीडिया पर नए-नए टास्क मिलते रहे। हर टास्क को उत्साह के साथ निर्धारित अवधि में पूरा करना नित्य नियम बन गया। 2022 में ऐसे पंद्रह टास्क पूरे करते हुए उन्होंने प्रमाण पत्र प्राप्त किए।

साइकिल से रेकॉर्ड...

- इंडिया गेट टू गेट वे ऑफ इंडिया तक वर्चुअल स्पर्धा में 1423 किमी की दूरी निर्धारित समय में पूरी करते हुए ई सर्टिफिकेट और मेडल प्राप्त किया।
- उज्जैन में हुई साइकिल यात्रा में 118 किमी एक दिन में पूर्ण कर 2023 और 2024 में सबसे उम्र दराज महिला प्रतिभागी का सम्मान प्राप्त किया।
- लीप इयर में एक दिवस ज्यादा मिलता है। ऐसे में उस दिन 25 किमी की दूरी 2 घंटे 25 मिनट में पूरी की।
- वर्तमान में वर्चुअल चल रहे गोल्डन क्वॉडिलेटरल चैलेंज में सहभागिता करते हुए 5486 किमी में से 40% टास्क पूरा कर चुकी हैं।

सेहत का राज

साइकिलिंग करके मैं स्वयं को प्रकृति के करीब पाती हूं। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी साइकिल चलाने से अच्छा कोई व्यायाम नहीं है। इससे आप डॉक्टर से दूर रहेंगे। वैसे भी स्त्री के जीवन के पांच दशक परिवार और बच्चों का दायित्व निर्वहन करने में ही बीतते हैं। बच्चे जब पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं, तब जाकर एक स्त्री को अपने बारे में सोचने का अवसर मिलता है। मेरा सभी महिलाओं से यही कहना है कि वे अपने शौक जरूर पूरा करें और स्वस्थ्य रहें।
- **संध्या कुलकर्णी**, साइक्लिस्ट

पत्रिका आव्हान...

साइकिल चलाएं...पर्यावरण बचाएं

हमें भेजें आपके साइकिल चलाते फोटो...

आज **साइकिल दिवस** के मौके पर 'पत्रिका' संवाददाता आपके लिए खास स्टोरी लेकर आए हैं, विशेषज्ञ भी मानते हैं कि साइकिल चलाना सेहत के लिए फायदेमंद है। वहीं, साइकिल चलाने से पर्यावरण की रक्षा भी होती है, हम साइकिल चलाकर पर्यावरण बचाने की पहल में भागीदार बन सकते हैं। **विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून)** को आप साइकिल चलाकर यह संदेश 'पत्रिका' के माध्यम से जन-जन तक पहुंचा सकते हैं, इस दिन की गई आपकी इस पहल को पत्रिका प्रकाशित करेगा, इसलिए आपको **साइकिल चलाती अपनी तस्वीर** अपने नाम और स्थान के साथ हमें इन नंबरों **9425971500** पर वाट्सऐप करना है, अच्छी तस्वीर प्रकाशित की जाएगी। तस्वीर के साथ पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा कोई **सकारात्मक कैप्शन** भी भेज सकते हैं, इसका भी आपकी तस्वीर के साथ **6 जून** को पत्रिका में प्रकाशन किया जाएगा।

लक्ष्य लेकर बढ़ रहीं आगे

झाबुआ जैसे आदिवासी क्षेत्र में विगत 40 सालों से शासकीय सेवक के रूप में सेवाएं दे रहीं है। वर्तमान में वे कलेक्ट्रेट अधीक्षक की महत्पूर्ण जिम्मेदारी संभाल रही हैं। साथ में सामाजिक कार्य में भी उत्साह से भाग लेती आई हैं। बचपन से ही खेलकूद में रुचि होने के कारण अनेक साहसी खेलों में हिस्सा लिया। ट्रेकिंग का शोक शुरू से ही रहा। अगला लक्ष्य मुंबई से गोवा और मनाली से लेह तक की दूरी साइकिल से पूरी करने का है।

गोपाल भाई राठवा – गाँव लौटे, बदलाव लाए

आर्मी से रिटायर होने के बाद ज़्यादातर लोग आराम का जीवन चुनते हैं, लेकिन **गोपाल भाई राठवा** ने अपने गाँव लौटकर कुछ अलग ही रास्ता चुना — बदलाव का रास्ता।

युवाओं के लिए दिशा गोपाल भाई अब गाँव के युवाओं को आर्मी और पुलिस भर्ती की निःशुल्क ट्रेनिंग दे रहे हैं। वे रोज़ सुबह बच्चों को शारीरिक व्यायाम, अनुशासन और चयन की तैयारी करवाते हैं। आस-पास के गाँवों से आने वाले बच्चों को समय पर पहुंचने में कठिनाई होती थी, इसलिए उन्होंने खुद के खर्चे से **छोटा हॉस्टल** भी शुरू किया है, जहाँ बच्चे रहकर तैयारी कर सकते हैं।

महिलाओं के लिए रोज़गार सिर्फ युवा ही नहीं, गोपाल भाई ने गाँव की महिलाओं के लिए भी रोज़गार की राह खोली है। वे उन्हें **ऑर्गेनिक खेती और प्रोसेसिंग** की ट्रेनिंग देते हैं — जैसे अचार, मसाले, औषधीय पौधों की प्रोसेसिंग, जिससे महिलाएँ आत्मनिर्भर बन सकें।

दाल पनिया

एक पारंपरिक और प्रिय आदिवासी व्यंजन है, जो विशेष रूप से मध्यप्रदेश के झाबुआ और अलीराजपुर जिलों में लोकप्रिय है। यह व्यंजन झाबुआ की सांस्कृतिक पहचान और ग्रामीण जीवनशैली से गहराई से जुड़ा हुआ है।

पारंपरिक व्यंजन – कुलियारी की भाजी

कुलियारी की भाजी आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में खाया जाने वाला एक पौष्टिक और पारंपरिक व्यंजन है। यह खासतौर पर बारिश के मौसम में पाई जाती है, जब जंगल और खेतों में यह सब्ज़ी प्राकृतिक रूप से उगती है।

जंगल के फल

परंपरा से परिवर्तन तक

हनी बी डेटाबेज की पद्धति का प्रचार और प्रसार

महुवा के बीज की समस्या तो हल हुई और भी समस्या बाकी है।

अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद

जन्म : 23 जुलाई, 1906 को भावरा ज़िला अलीराजपुर

पिता : श्री. सीताराम तिवारी, **माता** : जगरानी देवी

शहादत : 27 फरवरी, 1931

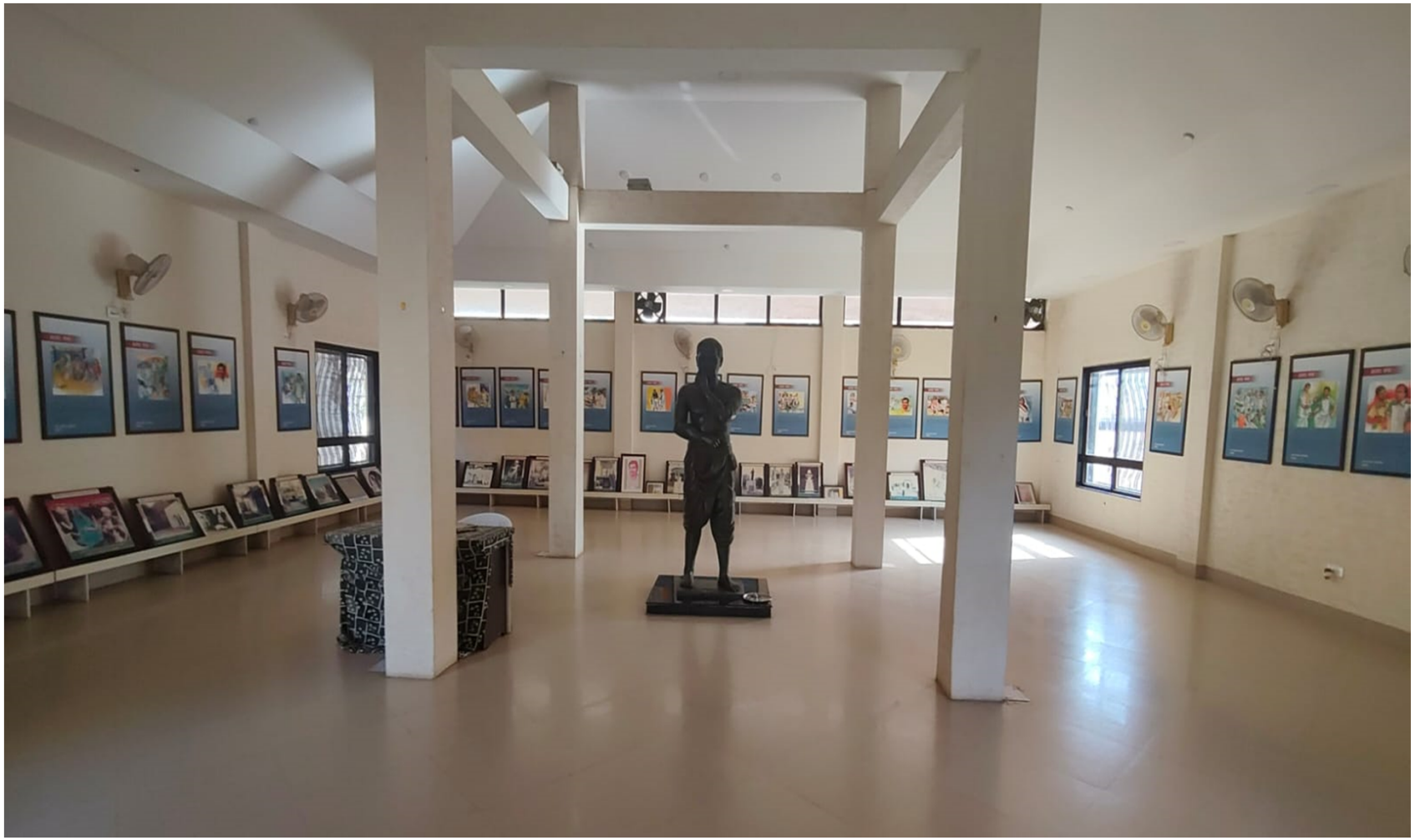

अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के कमाण्डर इन चीफ़ थे। उन्होंने भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन में सशस्त्र क्रांति की ज्योति प्रज्वलित कर क्रांतिकारियों की पीढ़ी तैयार की। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को सशस्त्र क्रांति के माध्यम से आज़ादी तक पहुँचाने की कल्पना की। उन्होंने काकोरी षड्यंत्र तक तथा षड्यंत्र के परिणामस्वरूप रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक़ उल्ला खाँ, ठाकुर रोशनसिंह आदि के फाँसी के बाद 1925 से 1931 तक लगभग पूरे सशस्त्र क्रांति के आन्दोलन का संचालन किया।

अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद ने अपने क्रांतिकारी जीवन की शुरुआत 1921 में बनारस में असहयोग आन्दोलन में भाग लेकर की। मोतीलाल नेहरू के बेटे पं. जवाहरलाल नेहरू से सशस्त्र क्रांति की तरफ मुड़े।उन्होंने रामप्रसाद बिस्मिल के द्वारा संचालित हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी से जुड़कर कई क्रांतिकारी घटनाओं को अंजाम दिया।

9 अगस्त, 1925 को काकोरी काण्ड, 15 दिसम्बर 1928 को लाहौर में सांडर्स की हत्या, 8 अप्रैल 1929 की असेंबली बमकाण्ड को सफलतापूर्वक अंजाम देकर कई स्थानों पर बने लाहौर के अभियुक्तों के बचाव हेतु क्रांतिकारियों के लिये सुरक्षित स्थल की योजना बनाई। बलोचिस्तान क्रांति का प्रशिक्षण तथा शाहीयों की बम सूची पहुँचाने की योजना बनाई।

क्रांतिकारी कार्यों को अंजाम देने के पश्चात उन्होंने इलाहाबाद, बनारस, शाहजहाँपुर, ग़ाज़ीपुर, इलालाबाद, झाँसी, बुलंदशहर, रामगढ़, बलिया, आगरा, झाँसी, टेकारीगंज, कानपुर, बनारस, दिल्ली, लाहौर आदि जगहों को क्रांति के केन्द्र बनाया।
युवाओं में उन्हें स्वतंत्रता के लिए उत्साह भरा।

27 फरवरी 1931 को अपने प्रमुख क्रांतिकारी प्रयासों में क्रांतिकारी साथी सुखदेव राज के साथ **इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क** में पुलिस से घिर जाने पर उन्होंने अंतिम गोली स्वयं पर चलाकर बलिदान दे दिया।
हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सशस्त्र विंग **हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन** पर गोलीबारी शुरू हो गई। जब उन्हें गोली लगी तो उन्होंने आत्मबलिदान कर दिया और आज़ाद नामधारी पर खरा उतरते हुए अमर हो गए।